>

Title: Issue regarding implementation of various projects in Bihar.

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (पटना साहिब): अध्यक्ष महोदया, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने इतने कम समय के नोटिस पर मुझे बोलने का मौका दिया। मैं आपका और सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं, पटना जो बिहार की राजधानी है और वहां के ओवर ऑल डैवलपमैन्ट की बात करें या वहां की डेंजरस सिचुएशन की बात करें, मैं उस पर थोड़ी रोशनी डालना चाहता हूं और चाहता हूं कि सरकार भी उस पर रोशनी डाले। मैं इस वक्त कोई शिकायत नहीं कर रहा हूँ लेकिन कुछ वस्तुस्थिति सामने रखना चाहता हूँ। मिसाल के तौर पर हमने बहुत बार बिहार के लिए स्पेशल पैकेज की कोशिश की है। आप जानती हैं और सरकार भी जानती है कि बिहार स्पेशल पैकेज डिज़र्व तो करता है। लेकिन इस वक्त मैं पटना पैकेज की बात कर रहा हूँ जो कि बिहार की राजधानी है। पटना रेलवे स्टेशन को वर्ल्ड क्लास बनाने की भी बात हुई थी। आपको पता है कि आज उसकी स्थिति क्या है? वह वर्ल्ड क्लास है या क्लास-लेस हो गया है, फिर हमारे मित्र शशी थुरूर की भाषा में "कैटल क्लास" इस पर सरकार रोशनी डाले। पटना के दीघा रेल कम रोड ब्रिज का शिल्यान्यास हमारे भूतपूर्व और अभूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपई जी ने सन् 2002 में किया था। अभी तक उसके पाए लगे हुए हैं, आगे कुछ पाए बन चुके हैं, बाकी सब बनना बाकी है। अगर वह बन जाता है तो गंगा सेतु ब्रिज, जो एक जमाने में देश के चंद सबसे बेहतरीन ब्रिजेस में एक था, आज उसकी युटिलिटी करीब-करीब खत्म हो चुकी है। वहां पर उसकी लचर स्थिति है। भगवान न करे कि वह किसी भी दिन टूट सकता है और वहां पर जो कैटस्ट्राफि होगी, हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। वहां पर जाम की यह स्थिति है कि अब पटना को कुछ लोगों ने जाम का शहर भी कहना शुरू कर दिया है। बख्तियारपुर साइड में, बक्सर साइड में, पटना से मुजफ्फरपुर जाने में महाजाम होता है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : सब की सलाह आ रही है।

â€¦(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Nothing will go on records.

*(Interruptions) â€¦**

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : यहां पर बैठे हुक्मदेव बाबू और रघुवंश बाबू हम लोगों के साथ समिति में भी हैं, जिसमें हम लोग यह बात उठा चुके हैं कि यह क्या हो रहा है। एक तरफ खतरा मण्डरा रहा है कि वह ब्रिज किसी भी दिन टूट सकता है दूसरी तरफ जाम की भयावह स्थिति है। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि अगर वह दीघा रेल कम रोड ब्रिज बन जाता है तो लोगों का मानना है कि उस ब्रिज का लोड और जाम का लोड 40 प्रतिशत वह ले सकता है और तब तक इस बीच में इस ब्रिज को मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

मैडम, मैं साथ ही साथ एक छोटी सी बात और कहना चाहता हूँ। हमारे फॉर्मर एविएशन मिनिस्टर सामने बैठे हुए हैं और ये भी इस बात को जानते और मानते हैं कि देश मे सबसे ज्यादा भयावह और खतरनाक एयरपोर्ट अगर कोई है तो वह पटना एयरपोर्ट है।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : स्पीकर मैडम भी जानती हैं।

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : मैडम, इस बात को आप भी जानती हैं। पटना एयरपोर्ट सबसे खतरनाक इसलिए है क्योंकि उसका रन-वे सबसे छोटा है। जब मैंगलोर में एक दुर्घटना हुई थी, उसके बाद भी यह बात रोशनी में आई थी कि पटना एयरपोर्ट सबसे छोटा और खतरनाक है। पटना एयरपोर्ट के साथ एक अजीब सा व्यवहार किया गया है। यहां फ्लाइट्स का ट्रैफिक काफी बढ़ चुका है लेकिन अभी तक वहां का विकास नहीं हुआ है। हवाई अड्डे के विस्तार और विकास के नाम पर तू-तू, मैं-मैं ही होती रही है। बिहार और केंद्र सरकार के बीच अभी तक सहमति नहीं बन पाई है। पटना एयरपोर्ट का न तो कोई विकास हुआ है ...(व्यवधान) और न वहां पर ढंग की बैठने की जगह है। वहां की फ्लाइट्स बढ़ गई हैं, लोग बढ़ गए हैं, ट्रैफिक बढ़ गया है, टूरिस्ट बढ़ गए हैं लेकिन वहां पर न कोई बैठने की जगह है और न कोई एयरोब्रिज है। छोटे-छोटे एयरपोर्ट्स को एयरोब्रिज मिला है और वहां नहीं है। मैं सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ। यहां वायालार रवि जी बैठे हुए हैं। इस मामाले को तय करने के लिए इन्होंने बिहार के सांसदों की एक बैठक भी रखी थी। लेकिन किसी कारणवश वह बैठक नहीं हो पाई थी। मैं चाहूंगा कि बैठक में बिहार के ही नहीं पूरे देश के सांसद शामिल हों क्योंकि वह राजधानी है।

हमारे पास दो ही रास्ते हैं। एक रास्ता है जो एक्सपर्ट्स कहते है, रेलवे लाइन्स को थोड़ा अलग किया जाए।

अध्यक्ष महोदया : अब आप अपनी बात समाप्त करें।

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : महोदया, दूसरा रास्ता है बगल में जंगल है। यानि बोटनिकल गार्डन जंगल से पंछी वगैराह आते हैं, पत्तल फेंके रहते हैं, उससे तो दुर्घटना की आशंका बढ़ेगी। पेड़-पौधों से भी दुर्घटना का खतरा हो सकता है और पहले हुआ है। पिछली बार जो दुर्घटना हुई थी वह पेड़ों की वजह से हुई थी। पेड़ों को काटने या जंगल को हटाने की बात होती है, तो हमारी इन्वायर्नमेंट मिनिस्ट्री बीच में आती है। महोदया, इन्वायर्नमेंट मिनिस्ट्री को और हम लोगों को यह तय करना है कि जान ज्यादा जरूरी है, या जंगल? इंसान ज्यादा जरूरी है। हम जिस डायनामाइट में बैठे हुए हैं, किसी भी दिन पटना में धमाका या एक्सीडेंट हो सकता है। जैसे गांधी सेतु में कटैस्ट्रफी की बात हुई, उससे बड़ा कटैस्ट्रफी पटना एयरपोर्ट पर हो सकता है।

मैं पूरे सदन से इसके लिए सहयोग और आशीर्वाद चाहता हूं कि जल्द से जल्द इसका समाधान किया जाए। इसे जल्द से जल्द किया जाये, सरकारी सिस्टम में जैसे काम होता है, वैसे नहीं, यह अर्जेंसी है, मैटर आफ अर्जेंट इंपोर्टेंस है।

मैडम स्पीकर, मैं चाहूंगा कि आप सरकार को अपना सुझाव एवं निर्देश दें कि वह इन मामलों का जल्द से जल्द समाधान करे।